Annexure - VII

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
WESTERN REGIONAL OFFICE
GANGESHKHIND PUNE-411 007.

PROFORMA FOR SUBMISSION OF INFORMATION AT THE TIME OF SENDING THE FINAL REPORT OF THE WORK DONE ON THE PROJECT.

1. NAME AND ADDRESS OF THE PRINCIPAL INVESTIGATOR : Dr. Ainur Ajijbhai Inamdar

2. NAME AND ADDRESS OF THE INSTITUTION : Shirdi Sai Rural Institute's
Arts, Science & Commerce College,
Rahata, Tal. Rahata, Dist. Ahmednagar
423107

3. UGC/APPROVAL NO. AND DATE : F.23-1091/14 (WRO), Date : 20/02/2015

4. DATE OF IMPLEMENTATION : 20/02/2015 to 20/02/2017

5. TENURE OF THE PROJECT : 2 years

6. TOTAL GRANT ALLOCATED : 1,75,000/-

7. TOTAL GRANT RECIVED : 1,27,500/-

8. FINAL EXPENDITURE : 1,64,831/-

9. TITLE OF THE PROJECT : "Rashtriya Ekata Ke Liye Sarthak Lipi : Devnagari"

10. OBJECTIVE OF THE PROJECT :

१. लिपि के उद्‌भव और विकास का परिचय करना ।

२. लिपि विज्ञान के इतिहास की जानकारी से अवगत कराना।

३. भारत की प्राचीन लिपियों से परिचित कराना ।

४. देवनागरी लिपि के उद्‌भव और विकास के बारे में जानकारी देना ।

५. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को स्पष्ट करना ।

६. राष्ट्रीय एकता के लिए सार्थक लिपि के रुप में देवनागरी का महत्त्व प्रतिपादित करना ।

11. WHETHER OBJECTIVES WERE ACHIEVED : YES
(GIVE DETAILS)

१. लिपि के उद्‌भव और विकास का परिचय करना ।

प्रथम अध्याय में लिपि के उद्‌भव और विकास का परिचय कराया गया है । जिसके माध्यम से लिपि के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डालने की कोशिश की गई है। लिपि का

उद्भव भाषा विकास के बाद ही हुआ है। जिस दिन मनुष्य ने भाषा को लिपिबध्द कर उसे दृश्य रुप प्रदान करने की कला का ज्ञान अर्जित किया। भाषा और लिखने की कला ही मनुष्य को प्रत्यक्ष रुप से पशु से पृथक करती है। मनुष्य को जब अपनी वाणी का संग्रह करने की इच्छा हुई तभी लिपि का श्रीगेणशा हुआ। भाषा की तरह लिखने की कला की उत्पत्ति भी विचारों की अभिव्यक्ति के लिए हुई होगी। लिपि ही एक ऐसा साधन है जो हमारी प्राचीन उपलब्धियों को सुरक्षित रखती है। भाषा भाव प्रकाशन का मौखिक साधन है तो लिपि अभिव्यक्ति का लिखित माध्यम है । लिपि ही वह सशक्त एवं सार्थक माध्यम है जिसके द्वारा भाषा को समय और स्थान की सीमा से पार पहुँचाया।

लिपि के विकास का प्रथम चरण चित्रलिपि है, जिसके विकास का अगला चरण भावमूलक लिपि है। कालांतर में भावमूलक लिपि विकसित हो कर भावध्वनिमूलक लिपि और फिर यह ध्वनिमूलक लिपि में विकसित हुई। ध्वनिमूलक लिपि में आक्षरिक ध्वनिमूलक लिपि का स्थान पहले आता है फिर वर्णिक ध्वनिमूलक लिपि आती है। वस्तुत: चित्रलिपि विकासक्रम की प्रथम सीढी है तो वर्णिक ध्वनिमूलक लिपि विकासक्रम का अंतिम सोपान है। मनुष्य ने अपनी आवश्यकता के अनुसार लिपि को स्वयं जन्म दिया और स्वयं ही उसका विकास किया। इस तरह मानव सभ्यता के साथ-साथ लिपि का विकास हुआ।

२. लिपि विज्ञान के इतिहास की जानकारी से अवगत कराना।

इसके अंतर्गत लिपि ज्ञान की प्राचीनता को व्यक्त किया गया है। प्राचीन काल में भारत वर्ष में लेखन कला का अज्ञान था, उस समय समस्त भारतीय वाङमय मौखिक परंपरा में सुरक्षित था। सिंधघाटी सभ्यता की खुदाई से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर यह सिध्द हुआ है कि भारत में लेखन कला का आरंभ अथवा विकास उतना ही पुराना है, जितना कि सैंधव-सभ्यता फिर भी लेखन की जानकारी भारत में लिपि विज्ञान प्रचलित ज्योति पुंज है। भारत की प्राचीन लिपि तथा उसकी प्राचीनतम सामग्री ग्रंथों के प्रमाण, शिलालेख, सिक्कों और मूर्तियाँ आदि से पता चलती है।

३. भारत की प्राचीन लिपियों से परिचित करना ।

भारत की प्राचीन लिपियों के अंतर्गत भारत में पहले सिंधुघाटी की लिपि, खरोष्ठी लिपि और ब्राम्ही लिपि का पता चला है। लिपियों का इतिहास काफी पुराना और दिलचस्प है। सर्वाधिक प्राचीन लिपि सिंधु लिपि है। भारत में प्राचीन काल से ही विभिन्न लिपियों का विकास समयानुसार परिवर्तनशील रहा है। सिंधुघाटी की लिपि अत्यंत प्राचीन है। इसी लिपि के

प्राचीनतम नमूने हडप्पा और मोहनजोदडो की खुदाई से प्राप्त हुए हैं। सिंधुघाटी लिपि के बाद दूसरी प्राचीन लिपि के रुप में खरोष्ठी लिपि का पता चलता है। ब्राम्ही प्राचीन काल में भारत की सर्वश्रेष्ठ लिपि रही है। हमारे देश की प्राय: सभी प्रमुख भाषाओं की लिपियों का उद्‌गम स्रोत भी ब्राम्ही लिपि रही है। क्योंकि भारत की भाषाओं की लिपियाँ ब्राम्ही की वंशज होने के कारण एक–दूसरे से मिलती–जुलती है। ब्राम्ही लिपि में जो वैज्ञानिकता थी, वही वैज्ञानिकता आज भी भारतीय लिपियों का आधार बनी हुई है।

४. देवनागरी लिपि के उद्‌भव और विकास के बारे में जानकारी देना ।

इसमें देवनागरी लिपि के उद्‌भव और विकास के बारे में जानकारी दी है। इसा की तिसरी शताब्दी तक ब्राम्ही लिपि सर्वाधिक प्रचलित रही है। नागरी या देवनागरी लिपि भी ब्राम्ही लिपि की संतति है। देवनागरी या नागरी का सम्बन्ध नागर ब्राम्हणो से माना जाता है। यह नागर ब्राम्हणों में प्रचलित लिपि होने के कारण नागरी कहलायी है। प्राचीन नागरी से आधुनिक नागरी, गुजराती, महाजनी, कैथी, राजस्थनी, मैथीली, बंगला, असमी आदि लिपियाँ विकसित हुई है। इस प्रकार ब्राम्ही से उत्तरी शैली से गुप्त लिपि और गुप्त से कुटिल लिपि विकसित हुई है। कुटिल लिपि से प्राचीन नागरी और बाद में आधुनिक देवनागरी का विकास हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि देवनागरी लिपि का विकास प्राचीनतम ब्राम्ही लिपि से हुआ है। इसका विकासक्रम ब्राम्ही लिपि – कुटिल लिपि– नागरी लिपि–देवनागरी लिपि है। गुजरात में १७ वी शताब्दी से देवनागरी का प्रचार था। विकासात्मक दृष्टि से पता चलता है कि नागरी के वर्णो में दसवीं शताब्दी से क्रमश: विकास होता रहा है। ग्यारहवीं शताब्दी की नागरी लिपि वर्तमान नागरी बन गई है। वास्तव में ग्यारहवीं शताब्दी से नागरी या देवनागरी लिपि का पर्याप्त विकास माना जाता है ।

५. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को स्पष्ट करना ।

देवनागरी लिपि भारत की प्रमुख लिपि है। संपूर्ण संस्कृत साहित्य की रचना इसी लिपि में हुई है, चाहे वह साहित्य उत्तर भारत का हो या दक्षिण भारत का। देवनागारी अनेक आर्य भाषाओं की लिपि है। किसी भाषा की ध्वन्यात्मक प्रतिनिधित्व करनेवाली लिपि ही वैज्ञानिक और पूर्ण लिपि कहलाती है। जब देवनागरी लिपि की तुलना संसार की अन्य लिपियाँ जैसे –रोमन, अरबी आदि से करते हैं, तो पता चल जाता है कि अन्य लिपियों की अपेक्षा देवनागरी में कुछ ऐसे गुण या विशेषताएँ हैं, जिनके फलस्वरुप उसे वैज्ञानिक लिपि कहा जाता है। देवनागरी लिपि सभी लिपियों की तुलना में अधिक सरल, शुध्द, स्पष्ट तथा देश की सांस्कृतिक परंपरा के अनुकूल है। इसमें संसार की लगभग सभी भाषा की भावाभिव्यक्ति को उच्चारित कर सकने की क्षमता है।

इसमें जो लिखा जाता है, उसका उच्चारण बिल्कुल वही किया जाता है। संसार की अब तक ज्ञात अन्य किसी भी लिपि में यह गुण पूर्ण रुप से नहीं मिलता। देवनागरी हमारे ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, संस्कृति एवं कलाओं की संवाहक है। देवनागरी लिपि ही ऐसी एक मात्र लिपि है, जो विश्व की समस्त भाषाओं को लिखित रुप में व्यक्त कर सकती है। अत: देवनागरी की वैज्ञानिकता निसंदिग्ध है।

६. राष्ट्रीय एकता के लिए सार्थक लिपि के रुप में देवनागरी का महत्त्व प्रतिपादित करना ।

वास्तविकता यह है कि नागरी या देवनागरी में भाषाओं की आत्मा का निवास है। इसका प्रयोग मुद्रा लेखन, टेलिप्रिंटर, तार आदि दैनिक व्यवहार के कार्यो में सुगम है। देवनागरी लिपि की सुगमता, श्रेष्ठता, वैज्ञानिकता, व्यावहारिकता, रुप सौष्ठव तथा स्वरयंत्रों की विभिन्न ध्वनियों को यथातथ्य लिपि बध्द करने की क्षमता देवनागरी लिपि में दिखाई देती है। देवनागरी अपने मात्रा–विधान, आकृति और व्यापकता के कारण निश्चित रुप से देश की राष्ट्रीय लिपि की आधिकारिणी है। यह पूर्णत: भारतीय लिपि है। इसकी उत्पत्ति और विकास दोनों ही भारत भूमि में हुए है। इस प्रकार इसकी जडे देश के इतिहास और संस्कृति में है। इसमें एक वर्ण के लिए एक ही ध्वनि मिलती है। जैसा लिखा जाता वैसा ही पढा जाता है। इसमें रोमन लिपि जैसी अनिश्चिता नहीं है। इसके प्रत्येक अक्षर का उच्चारण होता है। इसमें भाषाओं के आवश्यक ध्वनियों के लिए चिह्न विदयमान है। प्रत्येक ध्वनि के लिए एक विशिष्ट वर्ण दिखाई देता है। इसमें वर्णमाला के अक्षरों की संख्या पूर्ण है। 'विश्वकुटुम्बकम्' की भावना जगानेवाली देवनागरी लिपि सचमुच एक आदर्श लिपि और राष्ट्रीय एकता की सार्थक लिपि है।

12. ACHIEVEMENT FROM THE REPORT : YES

13. SUMMARY OF THE FINDINGS :
(IN 500 WORDS)

देवनागरी लिपि में वह शान्ति है कि हमें योग्यता, प्रतिभा, साहस, दिव्य, दृष्टि, समानता और विश्वबंधुत्व की ओर बढाते चली जा रही है। देवनागरी हमारी ऐसी सम्पत्ति है जो अन्य सम्पदाओं की तरह अधिकार नहीं जमाती अपितु प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्तव्यों का बोध कराती है। राष्ट्रीयता की भावना जागृत कराती है।

उत्तर भारत की भाषाएँ और दक्षिण तथा पूर्वोत्तर भारत की भाषाएं आजतक अधिक निकट सम्पर्क में नहीं आ पाई हैं। एक देश के निवासी होने पर भी हम भाषा की दृष्टि से परस्पर करीब नहीं आ सके। भारतीय भाषाओ के आपसी सम्बन्धों को साबित करने के विभिन्न सूत्रों

और माध्यमों पर संजीदगी से विचार करना होगा इस बहु भाषा–भाषी विशाल देश में हर एक नागरिक, हर एक शिक्षित व्यक्ति देवनागरी लिपि जानकार हो, यह आज के परिवेश में आवश्यक है। भारतीय भाषाओं के समझने और उनसे परिचित होने के लिए आज देवनागरी से बढकर दूसरा कोई उत्तम माध्यम नहीं है। भारतीय भाषाओं के आपस में सम्पर्क और सम्बन्ध जोडने का एकमात्र साधन देवनागरी लिपि है। सारे देश में सौहाद्र, सद्भावना, स्नेह तथा भारतीय भाषाओं की प्रगति जैसे पवित्र कार्य देवनागरी लिपि द्वारा संभव है।

वास्तविकता यह है कि देवनागरी में भाषाओं की आत्मा का निवास है। यह वैज्ञानिक लिपि है और भावों को मूर्त रुप देने की इनमें अद्भूत क्षमता है। यही कारण है कि देवनागरी लिपि को हिन्दी, मराठी, सिंधी, डोंगरी, कोकणी, राजस्थानी, मगही एवं भोजपुरी आदि भाषाओं ने अपना लिया है और थोडे प्रयास से इसका बोध सहज संभव है। मुद्रा लेखन, टेलिप्रिंटर, तार आदि दैनिक व्यवहार के कार्यों में सुगम है।

भारतीयता की दृष्टि से देवनागरी अत्यंत महत्त्वपूर्ण लिपि है। मध्य–भारत की यह लिपि होने के कारण इसका महत्त्व और अधिक बढ जाता है। देवनागरी लिपि उत्तर– भारत के विभिन्न प्रांतों को ही नहीं जोडती, उत्तर एवं दक्षिण को भी जोडती है। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और श्रेष्ठता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि देवनागरी लिपि में सीमित संशोधन से भारत वर्ष की समस्त भाषाएँ और जन–जातियों से सम्बन्धित बोलियों को सरलता से लिपिबध्द किया जा सकता है। इतना ही नहीं देवनागरी लिपि सीखने से अन्य भाषा–भाषी लोगों को लाभ भी मिलेगा। जैसे उर्दू भी चले और उसके साथ ही देवनागरी भी सीखें और सब भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाएँ तो आपसी प्रेम और विश्वास बढ जाएगा। राष्ट्रीय लिपि के साथ ही साथ अंतर्राष्ट्रीय लिपि के रुप में भी आज देवनागरी में अपार शक्ति और संभावनाएँ है।

देवनागरी लिपि के माध्यम से हम विश्व की किसी भी भाषा को बोलना सरलता से सीख सकते हैं। देवनागरी सर्वाधिक सरल है, सर्वाधिक शुध्द और सुंदर है। देवनागरी लिपि की शुध्दता, स्पष्टता और सरलता में तो संसार की कोई भी लिपि देवनागरी लिपि की समता नहीं कर सकती। आज यह लिपि सर्वाधिक सरल, सर्वाधिक शुध्द, सर्वाधिक सुंदर एवं सर्वाधिक स्पष्ट

है। इस लिपि में संसार की सभी भाषाओं के शब्द लिखे जा सकते है। यह लिपि अक्षरात्मक होने के साथ इसमें सभी ध्वनि चिह्न हैं। इसमें एक ध्वनि के लिए एक चिह्न है। यह सुपाठ्य है। संसार की किसी भी भाषा या बोली में शायद ही कुछ ऐसी ध्वनियाँ होंगी। स्पष्ट है कि विश्व की किसी भी अन्य लिपि की अपेक्षा देवनागरी ही अंतर्राष्ट्रीय लिपि बनने का सामर्थ्य रखती है।

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए लिपि का होना आवश्यक इसलिए है कि इसके आधार पर देश की एकता बढ जाएगीं और ऐसी लिपि वर्तमान परिप्रेक्ष में देवनागरी ही हो सकती है। इसका कारण यह है कि संपूर्ण विश्व में देवनागरी जैसी वैज्ञानिक लिपि अन्य कोई नहीं है।

हर स्वतंत्र राष्ट्र के लिए एक राष्ट्रभाषा देश को एकता प्रदान कर सकती है और सुदृढ बना सकती है। भारत की प्राचीन भाषा की लिपि देवनागरी होने के कारण इसलिपि में ही पूरे देश को एकता के बन्धन में बांधने की क्षमता है। देवनागरी लिपि इसलिए श्रेष्ठ लिपि है क्योंकि यह एक वैज्ञानिक लिपि है। इसमें जैसा लिखा जाता है वैसा ही पढा जाता है। वर्णों का गठन भी वैज्ञानिक है। देखने में भी सुंदर है। तथा ऊपर शिरोरेखा और उसके बगल में खडीपाई इसकी लम्बाई चौडाई को स्थिर रखती है। दीर्घ और न्हस्व तथा व्यंजन वर्ण का विभाजन भी वैज्ञानिक ढंग से हुआ है। देवनागरी लिपि में संसार की समस्त भाषाओं को व्यक्त करने की क्षमता है।

देवनागरी लिपि भारतीय भाषाओं तथा जनमानस को जोडने का एक महामन्त्र है। यह भारतीय एकता और भावात्मक एकता का सूत्र है। भारतीय भाषाओं और संस्कृति के बीच अटूट एकता स्थापित करना देवनागरी लिपि का उद्देश्य है। स्वतंत्रता संग्राम में भी इसकी विशेष भूमिका रही है। इसने समस्त भारतीय जनमानस को स्वाधीनता की चेतना से जागृत किया है।

नागरी लिपि को अगर लिपि रहित बोली और भाषा वाले अपनाते है तो उनमें राष्ट्रीय एकता कायम हो सकेगी। क्योंकि लिपि की दीवार के कारण एक भाषा का दूसरी भाषा के साथ प्रभेद बढ जाता है। लिपि एक होने से भाषा सीखना सहज हो जाएगा। भाषाई दीवार भी दूर हो जाएगी, जिससे एक प्रान्त के लोग और दूसरे प्रान्त के लोगों में वैमनस्य का भाव नहीं रहेगा जिससे राष्ट्रीय एकता कायम होने में आसानी होगी। इसलिए भारत जैसे महान देवी–देवताओं के देश में देवनागरी से बढकर और कोई ऐसी लिपि नहीं हो सकती जो देश वासियों को अपनी

प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति के साथ राष्ट्र के प्रति भावनात्मकता, एकता एवं अखण्डता को सुदृढ कर सकें ।

जिस प्रकार किसी बहुभाषी राष्ट्र के लिए राष्ट्र एवं राजभाषा के रुप में कोई एक भाषा अपेक्षित है, उसी प्रकार बहुलिपि वाले राष्ट्र के लिए राष्ट्रलिपि के रुप में एक लिपि भी अत्यंत आवश्यक है। अन्य भारतीय लिपियों की तुलना में देवनागरी लिपि राष्ट्र लिपि के रुप में अधिक सक्षम और समर्थ है। संपर्क लिपि, जोड लिपि, सहलिपि,अतिरिक्त लिपि, वैकल्पिक लिपि, अनिवार्य लिपि, राष्ट्रलिपि, सार्वजनीन लिपि– हम देवनागरी लिपि को कुछ भी कह ले, किन्तु यह एकमात्र लिपि है जो भारत की राष्ट्रलिपि की उच्चतम मर्यादा एवं गरिमा के सर्वथा अनुकूल है।

14. CONTRIBUTION TO THE SOCIETY : Yes
(GIVE DETAILS)

हर स्वतंत्र राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि देश को एकता प्रदान कर सकती है और सुदृढ बना सकती है। भारतीयता की दृष्टि से देवनागरी अत्यंत महत्त्वपूर्ण लिपि है। इसमें पूरे देश को एकता के बन्धन में बांधने की क्षमता है। देवनागरी लिपि भारतीय भाषाओं तथा जनमानस को जोडने का एक महामंत्र है। देवनागरी देशवासियों को अपनी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति के साथ राष्ट्र के प्रती भावनात्मकता, एकता एवं अखंडता को सुदृढ कर सकती है।

देवनागरी लिपि से भाषाओं की उन्नति के साथ ही बहुत बडी जनता लाभान्वित हो सकती है। भारत का सांस्कृतिक गौरव बढाने में देवनागरी लिपि अत्यंत सहाय्यक सिध्द हो सकती है । देवनागरी लिपि ही एक ऐसी भारतीय लिपि है जिसका समस्त भारत में प्रचलन किया जा सकता है। हिंदुस्तान में सर्वमान्य हो सकने वाली अगर कोई लिपि है तो वह देवनागरी ही है। मुझे विश्वास है कि देवनागरी के द्वारा दक्षिण भाषाएँ भी आसानी से सीखी जा सकती है। आज देवनागरी लिपि ही सभी भाषाओं को बोलने वालों को न केवल निकट ला सकती है, बल्कि एक सूत्र में बाँध सकती है । आज भारत में साम्प्रदायिकवाद, क्षेत्रवाद तथा प्रान्तवाद के कारण युवा पीढी में भटकाव एवं ठहराव की स्थिति आ गई है। इस स्थिति को दूर करने के लिए सार्वभौमिक एकता की बात करनी चाहिए, इसके लिए सर्वोत्तम साधन या माध्यम है – भाषा तथा भाषा को प्रकट करनेवाली इकाई लिपि है। आज हम सभी भारतवासियों की पहचान देवनागरी लिपि के माध्यम से होती है। अनेक अच्छे–अच्छे ग्रंथों का प्रकाशन देवनागरी में किया गया है और किया जा सकता है।

देवनागरी लिपि समाज को जोडनेवाली लिपि है। देवनागरी के माध्यम से हम एक–दूसरे को समझ सकेंगे एक–दूसरे के विचार–विनिमय एवं साहित्य से परिचित हो सकेंगे। शासन, समाज और भाषा और लिपि का गहन और व्यापक सम्बन्ध है। विश्वसमाज में देवनागरी लिपि ही सामाजिक समरसता का अविर्भाव और विकास कर सकती है। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता विश्वसमाज को समतामूलक पारदर्शी मानवीय मूल्यों से जोडती है। देवनागरी लिपि सामाजिक समरसता का प्रचार–प्रसार करती है। यह लिपि भावबोध, विचारबोध और कर्मबोध को परदर्शी बनाती है। भाषा का लेखनस्तर पर नियमन, संयमन, सम्प्रसारण और व्यवस्थापन लिपि करती है। यदि समाज और संस्कृति की आधारभूमि भाषा है तो भाषा की आधारशिला लिपि है। लिपि विश्व भाषा संरचना को अनुप्रेरित और अनुप्राणित करती है। देवनागरी लिपि के कारण भाषाई और राष्ट्रीय एकता सुदृढ होगी। देवनागरी लिपि हमारे ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, संस्कृति एवं कलाओं की संवाहक है। 'विश्वकुटुम्बकम्' की भावना जगाने वाली देवनागरी लिपि सचमुच समाज के दृष्टि से एक आदर्श लिपि है ।

16. Whether an Ph.D. Enrolled /produced out of the project : **No**

17. No. of publications out of the project : **NIl**

(Dr. Ainur Ajijbhai Inamdar)
PRINCIPAL INVESTIGATOR

(Dr. B.K. Salalkar)
PRINCIPAL
Principal
Arts,Science & Commerce College,
Rahata, Dist. Ahmednagar

Arts Science & Commerce College, RAHATA

ISSN 2231-3249

New Voices

Multilingual International Refereed Journal of Multidisciplinary Studies

Volume - IV Issue - III December 2016

New Voices ISSN 2231-3249

Volume - IV Issue - III December 2016

New Voices

Multilingual International Refereed Journal of Multidisciplinary Studies

Editor

Dr. Shaikh Parvez Aslam Abdullah

Assistant Professor & Head ,
Dept. of English, Lokseva College of Arts & Science,
Aurangabad (M.S.)

New Voices Publication

Block No. 8, "Gulmohar Apartment" Opp. Head Post Office,
Aurangabad - 431001 (M.S.) India

www.newvoicespublication.com

New Voices ISSN 2231-3249

CONTENTS

MASS COMMUNICATION & JOURNALISM

Impact of New Technologies on Broadcast Production: A comparative study of public & private sectors
LIN ISA **Sudhir Gavhane** 1

ENGLISH

Linguistic and Non-linguistic Politeness in English and Arabic: Implications for Translation
Firas Sweid 5

Media and Intercultural Communication: Exploring the Role of Media in Developing Intercultural Competence
Aref Nassi Abduh Nasser 10

The Articulation of Feminine and Natural Sensibility in Kamala Markandaya's Nectar in a Sieve and anita Desai's Fire on The Mountain
Miss. Zeba Siddiqui 16

Using of Mobile-Phone-Technology as a Teaching Aid in English Class Room
Ferdous Ali Abdullah Qahtan 19

Human Rights versus Ethics
Saleh Ahmed Salim Alzubeidi **Haseeb Ahmed** 23

Politics and Culture in Tony Kushner's *Homebody/Kabul:* A Critical Analysis
Amer Hamed Suliman 26

Films as a Design of Reconstruction
Madhav Santajirao Hande 31

A Linguistic Analysis of Errors Made in Written English by Yemeni Students
Ebtissam Ezzy Alwan 33

The Complex Nature of English Language in Teaching Process
Hanan Ahmed Ali Al-Jarmoozi **Farhat Durrani** 37

Marginal Voices: Displacement and Identity in Nafisa Haji's *The Writing on My Forehead*
Bhagyashri Shrimant Pawar 41

Feminism In Timeri N. Murari's Novel the Small House.
Nile Pramod Machhindra 45

Honor Killing: Dishonor to Humanity in selected Indian Hindi Cinema
Atkare K.A. **Farhana Khan** 48

Monotheistic Religions' Impacts on Slavery
Abubaker Ahmed Zainalabden Alseqqf 52

Thematic and Stylistic Study of Modernism
Ebrahim Mohammed Mansoor Al-Mhab 59

Depiction of mystery in the select detective fiction of Agatha Christie and Ibne Safi
Sayed I.G. 62

SHORT STORY

The Cages of Tom Jefferson
Mohammed Osman Mohammed Abdul Wahab 64

LIBRARY SCIENCE

Maulana Abul Kalam Azad: An Educational Contributor to the Nation 70
Mohammed Mudassir Ahmed

'Relevence of Internet for Effective Task of Libraries' 73
Pallavi Dnyanoba Mundhe

EDUCATION

To Explore The Predictors of Attitude Towards Science Among Male and Female School Students 75
Abdul Raheem

MATHEMATICS

Angle of Elevation and Velocity in Basket Ball Free Throw 83
Mohmed Zafar Mohmed Saber

HINDI

देवनागरी : एक आदर्श लिपि 85
ऐनूर शब्बीर शेख

गाँधीवाद और आधुनिक हिंदी साहित्य 89
गडाख दिपाश्री कैलास

उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों में आधुनिकता के बाह्य एवं वास्तविक स्वरूप का निवास परिवेश, लिंग एवं पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन 92
जकी मुम्ताज

हानूश : विषम परिस्थितिमें संवर्धित कला चेतना 100
सुरेश बाबर

MARATHI

१९८० नंतरच्या मराठवाडयाच्या ग्रामीण कादंबरीतील स्त्रीजीवन 102
संतोष देशमुख

देवनागरी : एक आदर्श लिपि

ऐनूर शब्बीर शेख

भाषा विचारों के आदन-प्रदान का माध्यम होती है। उसे लिखित रुपसे वक्त करने के लिए कुछ भाषा कहलाते है। उच्चारित भाषा को चिह्नों द्वारा अंकित करने की व्यवस्थित प्रणाली लिपि कहलाती है। भाषा को प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करना लिपि का उद्देश्य होता है। लिपि ही ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी भाषा को स्थायित्व प्रदान करता है।लिपि भाषा की अनिवार्य शर्त तो नहीं है,किन्तु लिपि के बिना भाषा का विकास भी अवरुध्द रहता है।कालिदास ने लिपि के संदर्भ में कहा है।

'लिपर्यथा- वदग्रहणेन वाड्मय नदीमुखेनेव समुद्रमाविशत'१ अर्थात् लिपि का यथोचित अध्यदन करने से समस्त वाङ्मय का ज्ञान उसी तरह हो जाता है जैसे नदी द्वारा समुद्र तक पहुँचना। किसी भी राष्ट्र की एकता और दृढता के लिए अनिवार्य है कि वहां एक भाषा और लिपि हो। हर भाषा की अपनी विशेष लिपि होती है। लिपि के महत्त्व को देखते हुए भारत के संविधान निर्माताओं ने संविधान के अनुच्छेद ३४३(१) में जहां हिन्दी को संघ का राजभाषा स्वीकार किया, वही देवनागरी को उसकी आधिकारिक लिपि के रुप में मान्यता दी है।

किसी भी देश को अपनी अस्मिता एवं एकता स्थापित करने के हेतु एक सम्पर्क भाषा और लिपि की आवश्यकता होती है। भाषा की उत्पत्ति के बहुत बाद में लिपि का विकास हुआ। लिपि और भाषा जैसे राष्ट्रीय अस्मिता एवं सांस्कृतिक एकता के प्रश्न पर राजनेताओं को दलगत राजनिति से तथा आचंलिक संकीर्णता को छोडकर देश हित में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से विचार करे तो यह स्पष्ट प्रतीत होगा कि हिन्दी और देवनागरी की राष्ट्रभाषा एवं राष्ट्रलिपि का सम्मान परंपरा, वर्तमान और भविष्य में समरसता स्थापित करने में समर्थ है देवनागरी। हिन्दी तथा इसकी विविध बोलियाँ देवनागरी लिपि में लिखि जाती है। इस प्रकार देखा जाए तो देवनागरी लिपि भारत की सांस्कृतिक अस्मिता तथा राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है। "देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा हिंदुस्तान में सांस्कृतिक सेतु के रुप में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन कर रही है, संपर्क भाषा और लिपि के रुप में हिन्दीतर भाषाओं और लिपियों का समाधान है देवनागरी लिपि ।"२

देवनागरी लिपि आज जहाँ इन्टरनेट सूचना प्रौद्योगिकी के युग में देश और विदेश में सतत् प्रयुक्त है भारत के गौरव एवं गरिमा का द्योतक है। वहीं वह भारतीय मनीषा की अपूर्व शोध और चिंतन परंपरा की प्रधान संरक्षिका भी है। देवनागरी लिपि की सहजता सुगमता ध्वनि शास्त्रगत वैज्ञानिक विधान, उच्चारण की एक निष्ठता लिपि विज्ञान की परिपक्वता आदि उसे सर्वश्रेष्ठ लिपि के रुप में स्थापित करते हैं।

देवनागरी लिपि आज संसार की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है। इसमें संसार कपे लगभग सभी भाषाभिव्याक्तियों की उच्चारित कर सकने की क्षमता है। इस लिपि की विशेषता यह है कि इसमें जो लिखा जाता है, उसका उच्चारण बिल्कुल वही किया जाता है। संसार की अब तक ज्ञात अन्य किसी भी लिपि में यह गुण पूर्ण रुप से नहीं मिलता। देवनागरी लिपि में एक निश्चित वर्ण का प्रयोग ही उचित माना गया है। इसलिए इसे सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि माना जाता है। भाषा को लिखने के लिए लिपि ज्ञान की आवश्यकता होती है।

यदि भाषा शरीर है तो लिपि उसकी आत्मा । अतः जैसे बिना आत्मा के शरीर निर्जिव है उसी तरह लिपि के बिना भाषा का भी यही हाल है। आज विश्व में अनेक लिपियाँ प्रचलित है, परंतु इन सभी

लिपियों में देवनागररी लिपि की अपनी स्वतंत्र महत्ता है क्योंकि। विश्वलिपियों के संदर्भो में देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है। यह एक आदर्श लिपि है। देवनागरी लिपि का प्रत्येक चिह्न अक्षर है। इसमे एक ध्वनि के लिए एक ही चिह्न है। यह वर्णनात्मक लिपि है। लचीलापन इसकी विशेषता है। देवनागरी कलात्मक लिपि है। इसमें एक चिह्न से एक ही शब्द का बोध होता है। देवनागरी अक्षरात्मक लिपि है। देवनागरी लिपि विश्व की सर्वश्रेष्ठ सरल एवं बोधगम्य लिपि है। इसमें भावों का मूर्त रुप में प्रकट करने की अद्भुत एवं अभूतपूर्व क्षमता है। आचार्य विनोबा भावे ने कहा है कि "नागरी लिपि से बढकर वैज्ञानिक लिपि मैंने दुनिया में पाई नहीं।"३

डॉ. सुनीतिकुमार चटोपाध्याय मानते है कि भारतीय लिपि रोमन से बहुत उंची है- वह है विज्ञान सम्मत प्रणाली से भारतीय वर्णमाला के अक्षरों का समावेश या क्रम। इसमें स्वर वर्ण पहले दिए गए है, तद्नंतर व्यंजन वर्ग समूह -मुह के अंदर या कंठ से लेकर उच्चारण स्थानों के अनुसार तालु, मूर्धा, दंत, क्रमशः मुंह के बाहर ओष्ठ तक आकर कंठय, तालव्य, मूर्धन्य, दंत्य ओष्ठ्य में पांच स्पर्शवर्णों के वर्ग, फिर प्रति वर्ग में अघोष (यथा-क) और घोषवत् (क), तथा नासिका (यथांग) और अघोष अल्पप्राण (क), अघोष महाप्राण (ख) घोषवत् अल्पप्राण (ग) घोषवत् (घ) इस तरह से वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ग सजाए गए हैं। स्पर्श वर्ण के बाद अंतः स्थल वर्ण (य, र, ल, व) तद्नंतर उष्म वर्ण (श, ष, स,ह) । इस प्रकार का विज्ञान सम्मत वर्णक्रम संसार की किसी भी वर्णमाला में नहीं है।

वैश्वीकरण की भाषा का मतलब शोध, बाजार, अन्वेषण, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा बनना। इसीलिए वैश्वीकरण, निजीकरण, उदारीकरण एवं विश्वग्राम का शगुफा कम्प्युटर इण्टरनेट ई-मेल के कारण बिल्कुल नया है। निस्संदेह मैक्समूलर से लेकर ग्रियर्सन एवं विलियम जोन्स व्यक्ति या जॉन क्रिस्ट जे आर फर्थ, ब्लूम फील्ड, डेनियल जोंस, जोन शॉर आदि अनेक विदेशी विद्वानों की श्रंखला मुक्तकंठ से देवनागरी लिपि का गुणगान करती रही है। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और सरलता को देखते हुए यदि पडोसी देश भी इस लिपि का प्रयोग करें तो अंतरराष्ट्रीय सद्भावना में अवश्य वृध्दी होगी। देवनागरी लिपि जापांनी और चीनी के लिए भी चल सकती है क्योंकि जपानी भाषा की लिपि चित्रमय लिपि है जिसके पास चित्रों की संख्या लगभग दो हजार है। जिसे सीखना सरल काम नहीं है। उर्दू का साहित्य भी अब देवनागरी में लोकप्रिय होता जा रहा है। बाईस भाषाओं को जाननेवाले विनोबा भावे ने अपने अनुभव से जाना था कि देवनागरी लिपि संसार की सर्वोत्तम लिपि है, जिसमें चंद ध्वनियों के लिए चिह्न बनाने पर संसार की हर भाषा सुगमता के साथ लिखी जा सकती है, पढी जा सकती है, समझी जा सकती है। उनका विचार था कि जगत् को जोडना देवनागरी लिपि द्वाारा संभव हो सकेगा ।दूरदृष्टि रखनेवाले विनोबा जी ने कहा था कि देवनागरी लिपि में चीन भाषा की अच्छी तरह से लिखी जा सकेगी। चीनी, रुसी जपानी, स्पेनिश, फ्रेंच, अरबी जैसी कई भाषाओं के रिडर्स अब देवनागरी लिपि में उपलब्ध हैं।

आज यूरोप और अमेरिका आदि में कंम्प्यूटर सॉफ्टवेअर के विकास में जो शोधकार्य हो रहे हैं उनमें भी देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता ने विशेषज्ञों का ध्यान आकृष्ट किया है। समस्त विश्व को एक सूत्र में तथा पारस्परिक आदान, प्रदान के लिए रोमन सहित अन्य कोई भी लिपि कुछ नहीं कर सकती क्योंकि उनकी अपूणर्ता और अवैज्ञानिकता स्वतः स्पष्ट है। परिणामतः देवनागरी लिपि के माध्यम से चीनी, जापानी, रूसी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी अरबी, जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं को आसानी

से आत्मसात किया जा सकता है। अतः देवनागरी की उपादेयता स्वयंसिध्द है। देवनागरी के माध्यम से ही 'एक विश्‍व एक मानव' कल्पना को मूर्त रुप दिया जा सकेगा।

हमारी महान संस्कृति का प्राचीन वाङ्मय चाहे वह वेद पुराण, गीता, उपनिषद हो या रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य हो आज नागरी लिपि में उपलब्ध है। बौध्द और जैन साहित्य भी नागरी लिपि में ही मिलता है। इस प्रकार भाषा और संस्कृति की दृष्टि से देवनागरी लिपि का विशेष महत्त्व है। आज सूचना और प्रौद्योगिक के युग में भी नागरी लिपि में अपनी श्रेष्ठता और वैज्ञानिकता विश्‍व के सामने सिध्द कर दी है। और इस लिपि को ही कम्प्युटर के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है। नासा के प्रसिध्द वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने तो यह घोषित कर दिया है कि संस्कृत भाषा और देवनागरी लिपि ही कम्प्युटरी आशावानी की दृष्टि से आदर्श लिपि है। इस प्रकार देवनागरी लिपि के रुप में भारत विश्‍व की प्रगति में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है। शून्य का अविष्कार भी भारत में ही हुआ था, जो विश्‍व को भारत की सबसे बडी देन है।

नागरी लिपि जिसे देवनागरी लिपि भी कहा जाता है। भारत की प्राचीन लिपि ब्राम्ही से ही विकसित हुई है। यह लिपि इतनी समक्ष एवं समक्ष एवं पूर्ण है कि जो लिखा जाता है वही पढा जाता है और जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। विश्‍व की ऐसी कौन सी भाषा या बोली है जो देवनागरी में नहीं लिखी जा सकती ? यह क्षमता अन्य किसी लिपि में शायद ही हो। इस संबंध में रामचरितमानस के किष्किन्धा कांड का यह प्रसंग नागरी लिपि पर भी चरितार्थ होता है। जामवंत हनुमान जी को उनके अपार बल का अहसास कराते हुए कहते हैं-

"कवन जो काज कठिन जग माहीं ।
जो नाहिं होइ तात तुम्ह पाही ।।"४

ऐसी ही क्षमता देवनागरी लिपि में भी है। सभी भाषाओं को देवनागरी में सरलता से लिखा और पढा जा सकता है। यह विश्‍व की सबसे बडी श्रेष्ठ लिपि है। देवनागरी लिपि सम्पूर्णता, सुगमता, सुस्पष्टता, नियतता, तारतम्य, ध्वन्यात्मकता, अक्षरीय, वैशिष्ट्य, व्यापकता, सम्प्रेषणीयता, यन्त्रयोग्ता तथा नमनीयता जैसी वैज्ञानिक विशेषताओं के आसन को अलंकृत कर रही है लेखन-सौष्ठव, उच्चारण-सौकर्य, वर्णविन्यास, स्वर-व्यंजन, विधान, संपन्नता और सौंदर्य के कारण वह जहां विदेशी वैयाकरण, ध्वनिविज्ञानी, प्राज्यविद, संगणक वैज्ञानिक तुलनात्मक धर्मविद और लिपि शास्त्रियों के अप्रतिहंत आकर्षण का केंद्र है वही ऐक्य- सेतु के रुप में अपनी सहजात ऐतिहासिक भूमिका और रामन्वयवादी तथा सामरस्य पूर्ण सांस्कृतिक जीवन दृष्टि के कारण जननायकों, भूमिका और समन्वयवादी तथा सामरस्यपूर्ण शासकों, राजनयज्ञों, सन्तों, साहित्यकारों और कलामर्मज्ञो के अभिनन्दन का पात्र है। एकात्मकता के अमृत से अभिषिका करते हुए वह न केवल भारत की सीमाओं के भीतर प्रचलित ८२६ भाषाओं एवं १६५२ बोलियों को अपितु दक्षिण-पूर्व एशिया की ऐतिहासिक बौध्द पृष्ठ भूमिवाली राष्ट्रमाता और उससे भी परे जाकर विश्‍वभर की विकसित अविकसित २७९६ भाषाओं को विश्‍व-कुटुम्ब का अद्वैत मूलक मन्त्र दे रही है- "यत्र विश्‍वं भवत्येक नीड्म।।"५

इस तरह देवनागरी लिपि न केवल भारत के अन्दर सारे प्रान्तवासियों को प्रेम-बन्धन में बाँधकर राष्ट्रनागरी पद चरितार्थ कर सकती है, बल्कि सीमोल्लंघन कर दक्षिण-पूर्व एशिया के वृहत्तर, भारतीय परिवार को भी 'बहुजन हिताय-बहुजन-सुखाय' अनुप्रणित कर सकती है तथा विभिन्न देशों को एक अधिक सुचारू और वैज्ञानिक विकल्प प्रदान कर 'विश्‍व नागरी' का स्वप्न साकार हो सकेगा।

नागरी लिपि के प्रयोग का क्षेत्र बहुत व्यापक है। भारत के हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश में तो राज्य भाषा होने के कारण इसका प्रयोग होता ही है। जम्मू प्रदेश में डोंगरी के लिए, कोकणी के लिए, महाराष्ट्र में मराठी के लिए और नेपाली भाषा के लिए नागरी लिपि का ही प्रयोग होता है। हिंदी भाषी प्रदेश में जहाँ नागरी का सर्वत्र प्रयोग होता है। हिंदी भाषी प्रदेश में जहाँ नागरी का सर्वत्र प्रयोग होता है। नागरी लिपि एक नामनीय लिपि है। इसी नम्यता के कारण यह देश-विदेशी की भाषा बोलियों के लिए सरलता से प्रयुक्त है। देश में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आगमन के कारण विज्ञापन का प्रबल माध्यम देवनागरी होने के कारण सूचना क्रान्ति के युग में विश्वपटल पर देवनागरी अवश्य चमकेगी ।

"संस्कृत के संग चली हैं
खूब चमकी है निरन्तर
खूब ये फूली-फली हैं
विश्वभाषाओं में इनका नाम
नागरी लिपि में छिपा है ज्ञान।"६

संदर्भ :

१) नागरी संगम- डॉ. परमानंद पांचाल-जून-सितंबर २०१५,पृष्ठ ९
२) नागरी संगम- डॉ. परमानंद पांचाल- जून-सितंबर २०१५,पृष्ठ १०
३) चेतना का आत्मसंघर्ष - हिन्दी उत्सव ग्रंथ- डी. कन्हैयालाल नंदन,पृष्ठ १०५
४) नागरी संगम, डॉ. परमानंद पांचाल- जनवरी-मार्च २०१६,पृष्ठ २३
५) हिन्दी भाषा की लिपि संरचना-डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ १८९
६) नागरी लिपि- डॉ. परमानंद पांचाल- जुलाई-सितंबर २०१५, पृष्ठ ३९

प्रा. डॉ. ऐनूर शब्बीर शेख
कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, राहाता, ता. राहाता, जि. अहमदनगर